देखो, न्यारे होकर decision लेना वा समझानी देना अलग बात है ... परन्तु उनके साथ परेशान हो जाना अर्थात् बाप पर निश्चय में कमी की निशानी है।

देखो, आप बच्चों को बाबा ने पहले भी बताया है कि आप बच्चों का तपस्या के द्वारा पुण्य का खाता भरपूर हो रहा है ... और minor सा बचा पाप का खाता खत्म हो रहा है...।
इसलिए अपना हिसाब-किताब हल्के रह तेरा-तेरा करके खत्म करो ... अन्यथा और-और हिसाब-किताब बनते जायेंगे...!

इसलिए, हर संकल्प बाप को समर्पण करो।
बार-बार मन-बुद्धि पर attention रख, मन-बुद्धि को पकड़ बाप के पास ले जाओ। यही सहज से सहज तरीका है हिसाब-किताब चुक्तु करने का...।

जब आप हल्के रहोगे तभी तो आप अन्य आत्माओं का कल्याण कर पाओगे...।

देखो, अभी तो दुनिया की आत्मायें अपना पुण्य का खाता खत्म करने में और पाप का खाता भरपूर करने में लगी हुई है ... तो बताओ, फिर अन्त का scene कैसा होगा...?
उन आत्माओं के कल्याण के निमित्त आप ही हो...।

पहले सभी खज़ानों से स्वयं को भरपूर करो, तभी आप बाप के कार्य में सहयोगी बन पाओगे।

जितना इस समय आप बाप के सहयोगी बनोगे, उतना ही बाप के साथ का अर्थात् अन्तिम समय में बाप से मिलन के आनन्द का अनुभव कर पाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि ... बाबा बच्चों की लगन को देख रहा था, तो बाबा ने देखा कि बच्चों के अन्दर बहुत अच्छी लगन है और यही संकल्प है कि हम अपना 100% दे, अपने लक्ष्य को प्राप्त करें...।

तो बाप भी बच्चों को देख वाह बच्चे वाह..., के गीत गा रहा था...।

बस बच्चे, इसी तरह उमंग-उत्साह और खुशी में रह अपने पुरुषार्थ को बढ़ाते चलो और स्वयं की checking भी करते चलो कि मैं आत्मिक दृष्टि का, स्वमान का, बाप (परमात्मा शिव) के साथ का और गुणों और शक्तियों का, कितना percent अनुभव कर रहा हूँ...?

बच्चे, जब लगन अच्छी हो तो गुणों और शक्तियों को use कर उसे अपनी property बना लो ... तो फिर धीरे-धीरे यह naturally ही, अपना कार्य शुरू कर देगी...।
इसके लिए फिर पुरुषार्थ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी...!

बस अभी attention रखो...।
अपनी मन-बुद्धि को प्राप्तियों से इतना भरपूर कर लो कि बस यह उमंग-उत्साह में रह आगे से आगे बढ़ता चलें...।

अभी तो बाप का full सहयोग है, तो सहज ही आप अपनी मंज़िल तक पहुँच जाओगे।
बस आपको तो स्वयं पर attention ही रखना है।

यदि कोई कमी-कमज़ोरी आये तो वो बाप को समर्पण कर देना, वो भी एक second में..., अन्यथा या तो आप भारी हो जाओगे या दिलशिकस्त...!
इसलिए, इस बात का भी attention रखना...।

देखो, बाबा बार-बार कह रहा है कि आपको बस पुरुषार्थ करना है, सम्पन्न तो बाप ही बनायेगा...।

जितने-जितने समर्पण होते जाओगे ... उतनी जल्दी बाप, आप बच्चों को सम्पन्न और सम्पूर्ण बना देगा।

बस, अब आपके पास जो कुछ भी है वो बुद्धि से बाप को समर्पण कर बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी मंज़िल पर पहुँचो...।

देखो, कलियुग भी अब अपनी अन्तिम श्वांस ले रहा है और इसका कोई भरोसा नहीं कब खत्म हो जायें...!

इसलिए समय से पहले ही बाप-समान बन अर्थात् वरदानीमूर्त बन विश्व-कल्याणकारी बनो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, इस रंग-मंच पर कर्मों का बहुत सूक्ष्म खेल चलता है, जिसे हर आत्मा पूरी तरह समझ नहीं पाती ... जिस कारण वो अपना हिसाब-किताब बना लेती है ... फिर उसे ही चुक्तु करना पड़ता है...!

देखो, जब आप किसी भी कर्मेन्द्रिय को use करते हो अर्थात् आँख द्वारा कुदृष्टि होती है, तो वो भी पाप कर्म बन जाता है।

जबकि यह संकल्पों द्वारा किया गया पाप कर्म है जोकि योग द्वारा चुक्तु किया जा सकता है।

दूसरा है वाचा द्वारा...,

जब आप किसी भी विकारों में फँसी हुई कमज़ोर, परवश आत्मा को कुछ ऐसी बात बोलते हो जो उसे चुभ जाए ... अर्थात् वो दुःखी हो जाए, तो वो आपका ऐसा हिसाब-किताब बनता है, जिसको आपको शरीर द्वारा चुक्तु करना पड़ता है...!

इसलिए बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब मुख द्वारा बोलना बन्द करो...। अब ज़रूरत का ही बोलो।

देखो बच्चे, कमज़ोर आत्मा तो पहले से ही अपने संस्कारों से परेशान हैं और वो उसे खत्म करना चाहती है ... और यदि आप भी, सभी के बीच हल्की-सी भी कोई चुभती बात बोल देते हो तो वो एक बार दुःखी हो जाती है, जोकि आपका हिसाब-किताब बन जाता है...।

इसलिए किसी आत्मा के शुभचिन्तक बन समझानी देनी भी हैं, तो अकेले में बस एक ही बार दो..., फिर उसे बाप हवाले कर दो अन्यथा आप छोटा-छोटा सा हिसाब-किताब बना लेते हो, जो फिर चुक्तु भी तो करना पड़ेगा...!

अब जो समय जा रहा है वो केवल कमाई का है, इसलिए अब नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो और हर आत्मा के प्रति रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रख मन्सा सेवा करो।

इससे आपका दुआओं का खाता जमा होगा और आप जल्दी ही अपनी मंज़िल पर पहुँच जाओगे।

देखो, जब कोई भी पाप कर्म संकल्पों द्वारा होता है, तो वो योग द्वारा चुक्तु हो जाता है ... और यदि कर्मणा में आ जाता है, तो शरीर द्वारा और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा चुक्तु करना पड़ता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, क्या आप अपनी silence power को जानते हो...?

यह इस पाँच तत्वों की बनी दुनिया कि सबसे बड़ी शक्ति है...। इस शक्ति के द्वारा ही सारे विश्व पर विजय प्राप्त की जा सकती है...।

तो अब आप स्वयं को check करो कि मेरे अन्दर शान्ति का गुण कितने percent आया है...?

जो आत्मा शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित होगी उसे किसी भी प्रकार की हलचल ... चाहे तन, चाहे मन, धन, जन की हो ... वो अपने शान्त स्वरूप के आसन से नहीं उतरते...!

बाहरी हलचल उन्हें हिला नहीं सकती ... वो हमेशा एकरस, अचल-अडोल होगी...।

अब समय प्रमाण अपने इस गुण को अपनी दिनचर्या में use कर, इसे बढ़ाते चलो...।

बार-बार अपनी checking करो और अपने original गुण को धारण कर अपनी seat पर set हो जाओ।

यदि किसी कारणवश अर्थात् अपने ही स्वभाव-संस्कार के वश भी कुछ गलत कर देते हो ... तो ना तो दिलशिकस्त हो और ना ही अपना समय गँवा, जल्दी ही अपने original गुण को धारण कर अपनी seat पर set हो जाओ।

इसके लिए स्वयं से ही बातचीत करते रहो अर्थात् स्वयं को समझानी देते रहो ... और अब आपको यह ज्ञान भी हो चुका है कि अब समय प्रमाण स्वयं को स्व-स्थिति में स्थित करना अति आवश्यक है अर्थात् यही समय की मांग है ... तो मैं अपनी बुद्धि को कहीं और क्यों लगाऊँ...?

और अब तो बाप का वैसे भी full सहयोग है, बस 100% निश्चय रख आगे बढ़ो।

यदि क्या, क्यों में आये तो समय व्यर्थ चला जायेगा और दोबारा अपनी seat पर set होने में भी time waste होता है...।

इसलिए पहले से ही 100% knowledgeful हो अपनी बुद्धि को order प्रमाण चलाओ...।

अब वो समय आ चुका है कि सभी आत्माओं को घर (परमधाम) भेजना है।

इसलिए सभी को शान्ति की शक्ति दे, सभी को शान्त करना पड़ेगा ... और यह कार्य वो ही आत्मा कर सकती है जो अभी से 100% शान्त स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ करेगी।

फिर जल्दी ही आपके शान्ति के vibrations, full speed से चारों ओर फैलेंगे, जोकि दूर-दूर तक आत्माओं को अनुभव होंगे...।
इसलिए अब अन्तर्मुखता की अति आवश्यकता है...।

शान्ति ही सब शक्तियों की जननी है ... इसी शक्ति से हम सिद्धि स्वरुप बन पायेंगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चों का मन
अभी भी इधर-उधर भागता रहता है...!

इसलिए बच्चे, आप उसे बार-बार पकड़कर अपनी seat पर set करो।

बस अभी इसी अभ्यास का attention रखो ... और अगर attention रखते-रखते भी भाग जाता है..., तो alert होकर attention रखो, अलबेले होकर नहीं...।

बार-बार अपने ऊँच स्वमान के स्मृति स्वरुप बनो...।

देखो, कल्प-कल्प आप ही बने हो और आपको ही बनना है, बस attention रखो ... और सारा काम तो बाप ही कर देगा...।

बच्चे, अब अपने व्यवहार में गुणों और शक्तियों को प्रत्यक्ष करो क्योंकि आपके व्यवहार से ही बाप प्रत्यक्ष होगा...।

जैसे-जैसे आप अपने ऊँच स्वमान में स्थित होंगे, तो आपके व्यवहार से आपके गुण प्रत्यक्ष होंगे...।

यदि आप बाप की याद में रह और साथ ही अपने ऊँचे स्वमान में स्थित हो किसी भी आत्मा को प्यार भरी समझानी दोंगे, तो चाहे वो उसी समय माने, ना मानें ... पर अन्दर तक उसे वो बात touch होगी।
फिर धीरे-धीरे वो स्वयं ही बदल जायेगा...।
इसके लिए balance की अति आवश्यकता है।

ना ही किनारा करना है और ना ही उसमें फँसना है ... बल्कि स्वमान में स्थित हो स्नेह और सहयोग देना है।
देखो, आपके सम्बन्ध में आने वाली सभी आत्मायें विशेष है। बस, उनके ऊपर थोड़ा-सा वायुमण्डल का प्रभाव है ... और आपके सहयोग से यह सब आत्मायें भी परिवर्तन हो जायेंगी।

आपकी मन्सा केवल शुभ संकल्पों से ही भरपुर होनी चाहिए...।

बच्चे, बिल्कुल सहज रीति पढ़ाई करो ... बाबा की पढ़ाई केवल दो शब्दों की है - ‘अल्फ और बे...’ अर्थात् मैं कौन-सी वाली आत्मा हूँ और किसकी हूँ...?

इस अभ्यास के लिए भिन्न-भिन्न युक्ति use करो ताकि सहज ही आपका nature natural हो जाये...।

यदि आपके पुरुषार्थ के मार्ग में कोई भी स्वभाव-संस्कार, व्यर्थ संकल्प आये तो उसे भी हिसाब-किताब समझ, उसे जल्दी से जल्दी बाबा को सौंप अपनी seat पर set हो जाओ।

इसपर ज्यादा विचार ना चला इन कमज़ोरियों से साक्षी हो जाओ। बिन्दु बन बिन्दु बाप के साथ जाकर बैठ जाओ...।

बच्चे, आपको बस अलबेला नहीं होना है और ना ही दिलशिकस्त ... क्योंकि यह दोनों ही आपके मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है।

देखो, बाबा रोज़-रोज़ आकर आपको उमंग-उत्साह दिला ऊँचे से ऊँचे स्वमान में स्थित करता है। बस आप 100%, मतलब 100% attention रखो...।

फिर जल्दी ही पुरुषार्थ का समय खत्म हो प्रालब्ध का समय शुरु हो जायेगा।

बस बच्चे, इस मार्ग में बहुत-बहुत-बहुत-बहुत हल्के रहना है। स्वयं की checking करो, फिर अपनी seat पर set हो जाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप गृहस्थ व्यवहार में रहते हो, इसलिए आपको आवश्यक कार्य तो करने ही पड़ेंगे...।

परन्तु उस समय स्वयं की स्मृति के साथ-साथ बाप की स्मृति साथ रखो।
बार-बार मन-बुद्धि को पकड़कर बाप (निराकार शिव) के पास ले चलने का attention रखो।

ऐसा मत सोचो कि योग तो लगा नहीं...!
ऐसा सोचने से भारी हो जाते हो और बाप से connection टूट जाता है...!

देखो, आप बच्चों के लिए ही यह सहजयोग, कर्मयोग, निरन्तर योग और राजयोग मशहुर है।
यह सहज से सहज योग है...।

जहाँ मर्ज़ी, जिस मर्ज़ी स्थिति में आप बाप को याद कर सकते हो।

कर्म करते वक्त भी बाप को याद करो ... और यही निरन्तर योग होने से राजयोग सहज हो जाता है..., और अब इस अभ्यास को बढ़ाते चलो, फिर naturally ही आप स्वयं के और बाप के स्मृति स्वरूप हो जाओगे...।

इसलिए, बाबा बार-बार कहता है कि ज्यादा सोचो मत, बस हर पल मुझे याद करते रहो...।

यह आपका ऊँचा स्वमान और बाप की स्मृति का attention ही आपका परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर देगा...।

बस, इसमें ना ही अलबेला बनना है और ना ही दिलशिकस्त...।

जब आप हर पल बाप की छत्रछाया में रहते हो, तो बाप भी हर कठिन से कठिन परिस्थितियों से आपको निकाल अपने पास बिठा लेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपको मास्टर सर्वशक्तिमान् बन विश्व गगन में light house और might house बन चमकना है...।

इसके लिए आपको अब अपने हर गुण को शक्ति बना लेना है।

यह आपका गुण, आपकी शक्ति तब बनेगा जब गहराई तक वो गुण आपके अन्दर समा जायेगा ... और कोई भी गुण तब अन्दर समाता है, जब उसे बार-बार use किया जाए...।

इसलिए, अब आपको गुणों को तो use करना ही है और अवगुणों को avoid करना है।

वैसे ही, यदि किसी एक गुण को आप अपनी दिनचर्या में full use करते हो, तो आपके अन्दर सभी गुण आ जायेंगे ... और अवगुण खत्म हो जायेंगे..., और यही गुण आपकी शक्ति बन जायेंगे, जिससे ही विश्व-परिवर्तन का कार्य होगा...।

जैसे;
किसी भी एक गुण ... चाहे वो शान्ति हो, प्रेम हो, सन्तुष्टता हो, उसके स्वरूप बन जाओ अर्थात् हर पल उस गुण को स्मृति में रखो कि; मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ...।

जितना आप उस गुण को धारण करते जाओगे, उतना ही अवगुणों का विनाश हो जायेगा और आप मास्टर गुणों के सागर बन जाओगे।

जैसे;
सागर ऊपर से तो बिल्कुल शान्त होता है और अन्दर से खज़ानों से भरपूर...।

बच्चे, बस आपको पुरुषार्थ करना है - कभी किसी गुण का स्वरूप बन जाओ और कभी किसी गुण का..., और बाप का तो आप बच्चों को full सहयोग है ही, परन्तु करना आप बच्चों को ही है।

जितना attention रखोगे, उतनी ही सफलता मिलेगी। फिर ही आप सफलता स्वरूप बन जाओगे...।

देखो, किसी पुराने संस्कारवश कोई अवगुण आ भी जाये तो दिलशिकस्त नहीं होना है ... फिर मन-बुद्धि को बाप के पास ले जाकर अपने original गुण स्वरूप में स्थित हो जाओ।

बस बच्चे, थकना मत ... पुरुषार्थ करते रहो...।
क्योंकि पुरुषार्थ के बिना कोई प्राप्ति नहीं अर्थात् परिवर्तन के बिना प्रालब्ध नहीं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्व-परिवर्तन ही विश्व-परिवर्तन का आधार है।

स्व-परिवर्तन अर्थात् अपने स्वभाव-संस्कार को परिवर्तन कर बाप-समान बना लेना।

और जैसे-जैसे आपका स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होगा, वैसे-वैसे आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें, आपकी सहयोगी बन जायेंगी और सहयोगी बनते-बनते योगी...।

इसलिए अपने संकल्पों पर और बोल पर attention रखो...।

जो बच्चे स्व को परिवर्तन करने का तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् full attention रख रहे हैं और जब भी उनका कोई पुराना स्वभाव-संस्कार बाहर निकल कर आता है, तो बच्चे भारी हो जाते हैं ... और सोचते हैं कि इतना समय हो गया अभी तक पूरा परिवर्तन हुआ नहीं है...!

परन्तु बच्चे, आप भारी ना हो किन्तु अपनी checking करो कि पहले से कितने percent change हुआ है...?

जब तक सम्पूर्ण रीति सफाई नहीं होती है, तब तक यह paper के रूप में आयेंगे ही...।
परन्तु आप बच्चों को उस समय अपनी मन-बुद्धि को युक्ति-युक्त ढंग से चलाना है...।
इसके लिए एक तो स्वयं के मालिक बनो और दूसरा बाप (परमात्मा शिव) को अपने संग रखो।

देखो, जब भी कोई बीमारी आती है तो उसका proper इलाज किया जाता है, ना कि सोच-सोच कर समय waste किया जाता है...!

पुराना हिसाब-किताब किसी भी रूप में आना अर्थात् हिसाब-किताब clear होना ... या अपनी मंज़िल के समीप पहुँचना...।

इसलिए खुशी-खुशी अपनी मन-बुद्धि को समझानी दे अपने पुरुषार्थ को तीव्र करो...।

दिलशिकस्त वा भारी हो अपना समय व्यर्थ मत करो, बल्कि अपना attention बढ़ा, high jump दो।

यह बिल्कुल अन्तिम paper चल रहे हैं ... इसलिए हर paper में pass होना है।
Pass होने वाले आगे बढ़ जाते है और फेल होने वाले, पीछे...!

इसलिए 100% attention रख, knowledgeful और powerful बन, कम से कम समय में अर्थात् second में full-stop लगा, paper cross कर लो।

जितना बिन्दु बनने का अभ्यास होगा, उतनी जल्दी बिन्दु लग जायेगा...।

बस, पुरुषार्थ करते रहो ... विजय तो होनी ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जल्दी ही वो समय आने वाला है कि सभी आत्माओं के अब तक के बजाये गए role rewind होंगे।

तो आप क्या सोचते हो, कि जब आपकी CD rewind होगी, तो आप उसमें बजाये गये हर scene को देखकर खुश होंगे...?

बच्चे, अपना हर संकल्प, हर second ... इतनी अच्छी तरह से play करो कि आप देख खुशी में झूम उठो...।

ऐसा ना हो कि आप कहो - इस कारण..., नहीं..!

हर कारण का निवारण कर बाप की श्रीमत प्रमाण अर्थात ज्ञानयुक्त और योगयुक्त हो, अपना part play करो।

इस समय आप बच्चों को हर बात ज्ञानी और योगी बन उठानी है। क्योंकि ज्ञानयुक्त और योगयुक्त स्थिति में किया गया हर संकल्प, बोल और कार्य में केवल आपका ही कल्याण समाया हुआ है।

बाबा भी इसलिए बार-बार कहता है - अपना हर second, attention रखो...।

Attention रखने वाली आत्मा ही बाप समान बन पायेगी...।

देखो बच्चे, आपको 100% खुश और हल्के रहना है।
हल्के रहना अर्थात न्यारा होना।
न्यारा होना अर्थात् इस अन्तिम से अन्तिम समय में संसार में केवल दुःख ही दुःख होने वाला है, उससे साक्षी होना ...
क्योंकि इस समय किसी भी चीज़ में मेरापन होना अर्थात् अन्तिम समय में अपनी नसों को खिंचा हुआ महसूस करना...!

वैसे भी हिसाब-किताब clear होने के कारण, जिस चीज़ में minor सा लगाव होगा, वो धोखा दे देगी और आत्मा परेशान और स्वयं को खिंचा-खिंचा महसूस करेगी...।

यह कार्य बहुत speed से होने वाला है ... इसलिए, इस देह से न्यारा होने का अभ्यास बढ़ाते जाओ...।

कोई भी कार्य चाहे वो श्रीमत प्रमाण हो, उसे हठपूर्वक नहीं करना ... क्योंकि हठपूर्वक करने से या तो आप भारी हो जाते हो या वो संस्कार एक बार तो दब जाता है..., परन्तु फिर उभर कर आता है...!

इसलिए हर श्रीमत को knowledgeful होकर अर्थात् स्वयं के ही कल्याण के निमित्त समझ बड़े प्यार के साथ उसे follow करो ... जल्दी मत करो...।

धैर्यतापूर्वक अपने संस्कार को परिवर्तन करो। साथ ही साथ परिवर्तन की एक लगन होनी चाहिए।

जब आप attention रखोगे, तो बाप के सहयोग से वो संस्कार 100% विदाई ले लेगा...।

देखो, कोई भी बीमारी आती है, तो उसे सहज रीति चुक्तु करो। अर्थात् एक तो उस बीमारी के बारे में ना बोलो और ना विचार करो ... गोली ले लो, गोली भी शुभ संकल्पों के साथ लेनी है, फिर वो गोली भी ताकत देगी।
इसके बीच अपनी मनमत mix मत करो ... बाप को सौंप दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप बच्चे अब तेरा-तेरा के अभ्यास को बढ़ाते जा रहे हो...।
और तेरा-तेरा करने में आप क्या प्राप्ति अनुभव कर रहे हो...?

एक तो मन-बुद्धि हल्की हो जाती है ... और दूसरा शान्त हो, आप शान्ति के सागर में खो जाते हो...।

बच्चे, यह हल्कापन और शान्ति ही आपको शक्तिशाली बना देगी, और यह शक्तिशाली स्थिति ही आपको उड़ाकर बाप के पास बिठा देगी, जिससे आप इस दुःखमय संसार से न्यारे हो जाओगे...।

बच्चे, light house-might house का भी अभ्यास करो, इससे आपका तन और मन, दोनों ही अलौकिक और शक्तिशाली हो जाते हैं, जोकि powerful वातावरण बनाने में सहयोग देता है।

और यह powerful वातावरण ही आपको भी safe रखेगा और आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी..., और साथ ही साथ विश्व-परिवर्तन का कार्य भी करेगा...।

इसलिए, अब समय अनुसार एक तो हर पल light house - might house का अभ्यास करो ... दूसरा, कोई भी कमी-कमज़ोरी, परिस्थिति अर्थात् कुछ भी आये ... तेरा-तेरा कर दो...।
यह दो अभ्यास बहुत ज़रूरी हैं। यही आप बच्चों का पुरुषार्थ है।

इस पुरुषार्थ को बढ़ाने का attention दो, तो धीरे-धीरे अलबेलापन, थकावट, बोरियत ... सब खत्म हो जायेगी।

और वैसे भी आप बच्चों ने ही कल्प-कल्प यह पुरुषार्थ किया है, आपने ही विजय प्राप्त की है। बस, अब तो repeat ही करना है...।

स्वयं को रोज़ विजय का तिलक दो, और आगे बढ़ते जाओ।
बस ज्यादा सोचो मत...। ज्यादा सोच भी आत्माओं को भारी कर देती है।

बस, बाबा जो कहें, वैसे करने का पुरुषार्थ करते जाओ ... फिर सहज ही मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, क्या आपने बाप से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव किया है क्या...?

देखो, लौकिक में भी हर सम्बन्ध में ... चाहे कलियुग के अन्त में, स्वार्थवश ... सभी सम्बन्ध, बन्धन बन गये हैं...!
फिर भी उनमें अल्पकाल का सुख समाया हुआ है।

परन्तु यहाँ तो बेहद के बाप से अर्थात् भगवान, परमपिता परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव करना है अर्थात् अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करना है। यह अनुभव इस दुनिया से न्यारा और सबसे प्यारा है।

इसलिए इस दुनिया से अर्थात् इस देह की कर्मेन्द्रियों से न्यारा होकर ही हम बेहद के बाप से बेहद का सम्बन्ध निभा, बेहद का प्यार और सुख अनुभव कर सकते हैं।

देखो, आपने पूरे कल्प इस देह में रहने के कारण देह के सम्बन्धों में ही अपनी मन-बुद्धि लगाई है।

अब जबकि बाबा ने आकर आपको सारा ज्ञान दिया है, तो अपनी मन-बुद्धि इस देह से अर्थात् देह की कर्मेन्द्रियों और देह के संसार से निकालनी पड़ेगी, क्योंकि यह अल्प से भी अल्पकाल का सुख, बेहद का सुख प्राप्त करने नहीं देगा...!

जब तक मन-बुद्धि देह में फँसी हुई है तब तक हम सदा के लिए इस परमात्म सुख का अनुभव नहीं कर सकते।

इसलिए बाबा बार-बार कहता है बच्चे न्यारे बनो ... क्योंकि यह कुछ ही समय का न्यारापन आपको बाप का प्यारा बना देगा और साथ ही साथ आप अपने पूरे कल्प का ऊँचा भाग्य भी बना लेते हो।
फिर तो यह पुरानी दुनिया का त्याग नहीं बल्कि अपना ऊँचा भाग्य बनाने की युक्ति है...।

यदि अभी भी आपकी मन-बुद्धि इस पुरानी देह वा देह की दुनिया में थोड़ी-सी भी फँसी रही, तो आप परमात्म प्यार का सम्पूर्ण अनुभव नहीं कर पाओगे...!

फिर बताओ..., बाप (परमात्मा शिव) को पहचाना, ज्ञान को अच्छी तरह समझा और यथा शक्ति धारणा भी की और खूब सेवा भी..., परन्तु सम्पूर्ण परमात्म प्यार को अनुभव नहीं किया..., तो क्या किया...?

इसलिए, परमात्मा की याद के साथ-साथ बाबा से मीठी-मीठी रुह-रिहान करो।
इस देह की दुनिया से अलग हो अपने original स्वरूप अर्थात् अपने गुणों और शक्तियों से भरपूर स्वरूप को अनुभव कर बाप से मिलन मनाओ अर्थात् बाप से सर्व सम्बन्ध निभाओ।

जब सम्बन्धों का थोड़ा भी अनुभव होना शुरु होगा तो जल्दी ही आप बाप-समान बन जाओगे...।

इसलिए हर पल बाप को संग रखो, उनसे प्रेम भरी मीठी-मीठी रुह-रिहान करो अर्थात् परमात्मा के साथ का अनुभव करो...।
परमात्मा के साथ का अनुभव बहुत मीठा और बहुत प्यारा है। बस इसके लिए इस देह में रहते हुए भी इससे अपनी मन-बुद्धि निकालते जाओ क्योंकि इस दुनिया में किसी भी तरह की कोई प्राप्ति नहीं रही...!

इस दुनिया से सम्बन्धित हर प्राप्ति के पीछे दुःख समाया हुआ है। यह दुःख बढ़े, इससे पहले इससे निकल परमात्म प्यार में समा जाओ।

यह समय कल्प में केवल एक ही बार मिलता है, जिसमें प्राप्तियां अपरमअपार है।

बस बच्चे, अब अपने समय और संकल्पों को सफल करो।

देखो, रात से दिन होने में केवल एक second ही लगता है, उस second की value को समझो...।

यह ना हो आप समय का इंतज़ार करो और वो second, रात का अन्तिम second हो...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सच्चे दिल से हर पल आपके अन्दर यही आवाज़ हो - मेरा बाबा..., मेरा बाबा...।

और जब दिल से आप 'मेरा बाबा...' कहते हो तो आपके सामने स्वयं के स्वरूप के साथ-साथ बाप का light-might स्वरूप भी बुद्धि रूपी नेत्र में आ जाता है ... और वो powerful vibrations तन के साथ-साथ चारों तरफ भी फैलने लग जाते हैं, और यही vibrations आपको दुनिया से न्यारा कर powerful बना देते हैं।

बस बच्चे, आपको अब ना तो कुछ सोचना है और ना ही कुछ बोलना है ... अन्दर ही अन्दर प्यार भरा अजपाजाप चलता रहे - मेरा बाबा..., मेरा बाबा...।
यही शब्द आपको दुनिया से न्यारा कर देगा...।

देखो, जो कुछ भी आप अपना मानते हो - यह तन, मन, धन, जन, कमी, कमज़ोरी - वो तो सब आपने बाप को समर्पण कर दी अर्थात् आप बेफ्रिक बादशाह बन हल्के हो गये...।
क्योंकि मेरा-पन दुःख देता है और तेरा-तेरा करने से बाबा सबकुछ सफल कर देता है, और तमोप्रधानता को सतोप्रधानता में परिवर्तन कर देता है।

देखो, आप जो कुछ इन आँखों से देखते हो वो तो परिवर्तन होने वाला है...।

बच्चे, तेरा-तेरा करते ऐसा ना हो कि परिवर्तन के बिल्कुल अन्तिम समय में आपके अन्दर किसी भी चीज़ का minor सा भी मेरा-पन आ जाए...।

एक तो वो मेरापन दुःख का कारण बन जायेगा और दूसरा ... वो आपको मंज़िल तक भी नहीं पहुँचने देगा..., इसलिए खबरदार रहना...।

देखो, अभी तक आप गीत गाते रहें - "सब सौंप दो प्यारे प्रभु को सब सफल हो जायेगा..." - तो अब अमानत में खयानत ना कर लेना ... इसमें आपका ही नुकसान होगा...!

बाबा बच्चों को रोज़ कहता है ... बच्चे, बाप पर निश्चय रखो और हल्के रहो...।
तो क्या आप अपने लौकिक बच्चों को कहते हो कि मुझ पर निश्चय रखो...?
नहीं ना...!

परन्तु मैं बाप, आपको बार-बार एक ही बात कह रहा हूँ, क्योंकि बाप को पता है कि कहीं बच्चे थक ना जायें...!

यह जो अन्तिम समय जा रहा है हिसाब-किताब clear करने का, यह इतना सहज भी नहीं है...।
इसलिए बच्चे थोड़ा हलचल में आ जाते हैं।

परन्तु देखो, सबकुछ कि आदि आप ब्राह्मण बच्चों से ही होती है - चाहे सतयुग की, चाहे द्वापर की, चाहे संगमयुग की ... फिर हिसाब-किताब clear करने की आदि भी आप बच्चों से ही हुई है...।

हिसाब-किताब clear करना अर्थात् सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना अर्थात् विनाश का नगाड़ा बजना।
इसलिए धैर्यतापूर्वक "मेरा बाबा... मेरा बाबा..." करते रहो।

बाबा आप बच्चों के हर पल साथ है, फिर तो विजय हुई पड़ी है ना, निश्चयबुद्धि विजयन्ती का गायन भी आप बच्चों का ही है ।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा देख रहा था कि सभी बच्चों के एक ही बोल हैं कि मुझे तो बस बाबा चाहिए और कुछ नहीं...।

फिर तो बच्चे, इस पुरानी दुनिया से मन-बुद्धि को 100% बाहर निकालना पड़ेगा ... अर्थात् निमित्त बन कर्म-व्यवहार में आना पड़ेगा, ना की किसी भी प्रकार की खिंचावट की वजह से...।

यदि खिंचावट हैं तो इच्छा है ... इच्छा हैं, तो और कुछ भी चाहिए अर्थात् मेरा-मेरा है...।
इसलिए महीनता से checking करो।

देखो, बाबा यह नहीं कहता कि सबकुछ छोड़ दो..., परन्तु सबकुछ करते हुए उनसे न्यारे रहो।
और अगर न्यारे रहना मुश्किल लगता है..., तो एक बार जो कार्य आपको अपनी तरफ खींचता है, उसे छोड़ दो।
पहले अपनी स्व-स्थिति की तरफ ध्यान दो, अपने आपको शक्तिशाली बना फिर निमित्त बन कार्य करो...।

अभी powerful स्व-स्थिति की बहुत-बहुत ज़रूरत है, क्योंकि दुनिया में दिन-प्रतिदिन हर तरह का आकर्षण अर्थात् खिंचावट और समस्यायें बढ़नी ही है और यदि आपकी स्व-स्थिति powerful ना हुई, तो आप समझदार हो...!

और जो समय आप बच्चों ने किसी भी कारणवश व्यर्थ गँवा दिया, वो तो फिर नहीं आयेगा..., और वो आपके लिए कल्प-कल्प की नूँध हो गई...!

परन्तु अभी फिर भी minor सा समय रहा है, अपना ऊँचा भाग्य बनाने का..., फिर यह भी दोबारा नहीं मिलेगा...!

फिर बताओ भगवान बाप की इतनी ऊँच पालना से भी आपने क्या प्राप्त किया...?

यदि आप कोई काम नहीं करोगे तो काम रुकेगा नहीं ... और जिस काम की ज़िम्मेवारी बाप (परमात्मा शिव) की है, वो तो पहले से भी सुसज्जित ढंग से होगा...।
क्योंकि त्रिकालदर्शी बाप आप बच्चों के ही कल्याण के निमित्त बना है।

बाप आपके सारे हिसाब-किताब बहुत अच्छे ढंग से clear करवा, आपकी स्थूल और सूक्ष्म ज़िम्मेवारी सम्भाल लेगा।

बस, एक तो मन-बुद्धि पर controlling power चाहिए, दूसरा बाप पर सम्पूर्ण निश्चय - यही आपकी विजय का आधार है।

देखो ... बाबा ने कभी भी, किसी भी आत्मा से गृहस्थी या कर्म छुड़वाया नहीं है।
बस बाबा ने यही कहा कि ''पवित्र बनो - योगी बनो'' क्योंकि कल्प के अन्तिम समय में पवित्रता और बाप की याद के बिना इस पुरानी दुनिया में केवल दुःख-ही-दुःख है।

इसलिए पवित्र और योगी बनने में यदि किसी भी तरह की कोई बाधा है, कोई भी आत्मा या कोई भी कार्य आपके रास्ते में रुकावट स्वरूप बन जाता है, तो उसे छोड़ने में आपके कल्याण के साथ-साथ उसका भी कल्याण समाया हुआ है।

क्योंकि, किसी भी तरह का कोई बन्धन वा चिन्ता आत्मा को आगे बढ़ने नहीं देती।

एक निश्चिन्त और निर्बंधन आत्मा ही उड़कर अपनी मंज़िल को प्राप्त कर सकती है ... इसलिए check करो, फिर change करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, कभी आपने सागर को देखा है...?
उसमें इतना कुछ समाया होता है फिर भी वह बिल्कुल शान्त होता है।

इसी तरह आप बच्चों को भी इस दुनिया के बीच रहते हुए भी बिल्कुल शान्त रहना है अर्थात् कोई संकल्प नहीं ... और उस स्थिति में आप स्वयं को 100% अनुभव कर पाते हो...।

इसलिए स्वयं (भृकुटि के मध्य चमकती आत्मा...) को देखने का अभ्यास बढ़ाओ...। जितना-जितना स्वयं को अनुभव करोगे, उतना ही दुनिया से detach हो जाओगे, और इस दुनिया में रहते हुए भी आपको ऐसा लगेगा कि आप अपने घर (परमधाम) में हो और आपके चारों तरफ light ही light है।

यही स्थिति सबसे ऊँच स्थिति, बाप-समान स्थिति है...।

जब संकल्प से सृष्टि रची जा सकती है, तो फिर संकल्पों से क्या नहीं हो सकता...!
परन्तु तब, जब आप केवल स्वयं के अनुभवी स्वरूप होते हो। उस स्थिति में उत्पन्न संकल्प रचनात्मक और सिद्धि स्वरूप होते हैं।

इसलिए, स्वयं को बार-बार एकान्त में ले जाओ।
देखो, इस दुनिया में मन-बुद्धि लगा, अभी तक आपने क्या प्राप्त किया है और आगे भी मान लो इस दुनिया के हिसाब से हद के सब सुविधा-साधन अर्थात् सुख के साधन मिल भी जाते हैं तो उससे क्या प्राप्ति है..., और कितने समय के लिए...?

जबकि यह अन्त का भी अन्त जा रहा है तो ऐसी श्रेष्ठ वेला पर आप बाप की श्रीमत प्रमाण, अपना ऊँचा भाग्य बना लो।

सभी तरफ से मन-बुद्धि निकाल स्वयं में लगा लो। स्वयं के अनुभव से ही बाप का अनुभव होगा और उस समय की प्राप्ति पूरे कल्प की सबसे ऊँच प्राप्ति होगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आप अपनी शान्ति की स्थिति में स्थित हो...? अर्थात् मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ..., शान्ति मेरा स्वधर्म है..., शान्तिधाम की रहने वाली हूँ..., शान्ति के सागर की संतान हूँ..., इसके स्मृति स्वरूप बने हो क्या...?

हर second इस स्वरूप की स्मृति में रहो, फिर आपकी हर कर्मेन्द्रिय भी शान्त और शीतल हो जायेगी।

इसके लिए मुख के मौन के साथ-साथ, मन का मौन भी अति आवश्यक है ... और मन का मौन करने के लिए देह, देह का संसार और इससे सम्बन्धित बातों से detach होना पड़ेगा।

जितना-जितना आप अपने इस स्वरूप की स्मृति में रहोगे, उतना आप शक्तिशाली होते जाओगे। यह शान्ति ही आपकी शक्ति बन जायेगी। जिससे आपको अपने हर कार्य में सहज ही सफलता मिलनी शुरु हो जायेगी।

क्योंकि शान्त स्वरूप की स्थिति में स्थित होकर किये गये हर संकल्प सफलता को प्राप्त होते हैं और साथ ही साथ शान्ति के गुण में सभी गुण भी समाये हुए है, इसलिए आपको हर पल अपने आपको check करना है कि मैं शान्ति की स्थिति में स्थित हूँ या हलचल में हूँ...?

यदि minor सा भी मन में हलचल है तो स्वयं को अपने शान्त स्वरूप में स्थित कर अपने बाप के संग जाकर बैठ जाओ।

यह शान्ति की light-might की किरणें स्वयं भी feel करो और चारों तरफ भी फैलाओ...।

यही किरणें स्वयं की सेवा और विश्व-सेवा का कार्य करेगी...।

बस, अपने ऊपर attention रखो।
मन का मौन अर्थात् केवल समर्थ संकल्प ... कुछ भी बात आये, कोई भी परिस्थिति आये..., आप उसी समय अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित हो जाओ।
फिर परिस्थिति भी शान्त हो जाएगी और आपके आस-पास का वातावरण भी...।

बस 100% attention दे दृढ़ता-पूर्वक अभ्यास को बढ़ाते चलो। यही अभ्यास आगे चलकर आपको और आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को हर हलचल से बचा अपनी मंज़िल तक पहंँचा देगा।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं के part से, अन्य आत्माओं के part से और पाँच तत्वों के बने इस संसार से साक्षी हो इस खेल को देखो, फिर आपकी स्थिति अचल-अडोल हो जायेगी...।

बार-बार स्वयं को इस देह से न्यारा समझ बाप के संग बैठ जाओ।
किसी भी बात में मूँझों मत, क्योंकि यह जो बिल्कुल अन्तिम समय जा रहा है, वो हलचल से भरपूर है, क्योंकि हर चीज़ अति में जा रही है, विदाई लेने के लिए...।

इसलिए, अपने कमज़ोर संस्कारों से भी 100% साक्षी हो जाओ और अपनी यात्रा में तत्पर रहो।

मन को बार-बार पकड़कर बाप के पास ले जाओ..., यही अभ्यास आपको बाप-समान बना देगा।

देखो, इस यात्रा में ना तो अलबेला बनना है, ना ही थकना है और ना ही bore होना है - यह तीनों ही कमज़ोरी आपको बाप से detach कर देती है, इससे माया को भी chance मिल जाता है।

इसलिए बहुत careful होकर पुरुषार्थ करना है। हमेशा उमंग-उत्साह में रहो। अपने लक्ष्य और अपनी प्राप्तियों के स्मृति स्वरूप रहो।

देखो, इस दुनिया में सभी आत्मायें भगवान को पाने की, मिलने की इच्छा में लगे हुए है ... परन्तु भगवान, बाप बन आप प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे बच्चों के पास आ गया।
इतने बड़े अपने भाग्य को भूलो मत...।
लक्ष्य को भी याद रखो क्योंकि अब तो संगमयुग का हीरे तुल्य समय भी आया कि आया ... इसलिए पूरे उमंग-उत्साह में रहना...।

बाप आप बच्चों के संग है, और है भी क्या, अपने original स्वरूप को, बाप (निराकार शिव) को और अपने कर्तव्य को स्मृति में रखने का पुरुषार्थ ही तो करना है...!

बस यही पुरुषार्थ आप बच्चों को बाप-समान बना देगा और यही आपकी कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी।

खुशी में रहते हो तो हल्के रहते हो और ज्यादा सोचने से, क्या-क्यों के question करने से आप भारी हो जाते हो ... जिससे मंज़िल दूर दिखने लग जाती है...! इसलिए स्वयं को खुश रखो,
उमंग-उत्साह में रहो, हल्के रहो फिर मंज़िल पर भी पहुँचे कि पहुँचे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे, सर्व समर्पण हैं अर्थात् मन और बुद्धि की डोर बाप को समर्पण करने के साथ-साथ, अपनी हर problem, अपनी हर कमी-कमज़ोरी के संकल्प भी बाप को समर्पण कर ... बाप जैसे कहें, वैसे ही करने का 100% पुरुषार्थ कर रहे हैं, तो बाप भी उन बच्चों को बहुत ही सहज रीति, सारे तूफानों से पार करवा ... सम्पन्न बना, अपने पास बिठा लेगा...।

बाप ऐसे बच्चों को कहते हैं ... बस बच्चे, इस तन सहित, तन की सारी दुनिया बाप हवाले कर दो, और कुछ मत सोचो...। अर्थात् अपनी कमी-कमज़ोरी के बारे में ना सोचो, अर्थात् ... ये मत सोचो कि मैं बाप की श्रीमत प्रमाण चल रहा हूँ या नहीं...?
बल्कि जागृत अवस्था में रह ... मन-बुद्धि पर 100% attention दे, बाप जैसे कहें, वैसे करते जाओ...।

फिर बाप भी आपको समय आने पर वहाँ से उठा, अपने पास बिठा लेगा।
इतना निश्चय स्वयं पर और बाप पर रखो...।

वैसे भी आज्ञाकारी बच्चों के साथ बाप है और उनका रास्ता भी बिल्कुल clear है। जिससे वो सहज रीति अपनी मंज़िल पर पहुँच जायेंगे ... ये बाप (परमात्मा शिव) की guarantee है...।
इस समय भी जो बच्चे संकल्पों की तरफ attention नहीं रख पा रहे हैं, वो अपना attention बढ़ायें ... अन्यथा वो अपने रास्ते से भटक जायेंगे और भटके हुए मुसाफिर के लिए मंज़िल पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है, और कई बार नामुमकिन ... अर्थात् कई बार तो अपने ही संस्कारों और परिस्थितियों में समय लगा, समय waste करते, अपना number पीछे कर लेते हैं और कई बार तो इतना फँस जाते हैं कि बाप और ब्राह्मण आत्माओं की मदद के भी पात्र नहीं बन पाते...!
इस कारण, उनका मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन हो जाता है...!

इसलिए बच्चे, अभी तो फिर भी थोड़ा-सा समय है और बाप का सहयोग भी...। तो स्वयं पर attention दे, अपनी मन-बुद्धि को बाप की श्रीमत प्रमाण चलाओ।

देखो, जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा है तो परिस्थितियां और कमज़ोरियां भी बढ़ रही है क्योंकि वायुमण्डल तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है।
इसलिए, समय से पहले हल्के रह बाप को सर्व समर्पण हो अर्थात् अपने सारे हिसाब-किताब बाप को सौंप अपनी मन-बुद्धि को बाप की आज्ञा प्रमाण चलाओ, तब ही आप आने वाली हिमालय जैसी बड़ी और भयानक परिस्थितियों से बच पाओगे।

देखो, बाप अपने आज्ञाकारी और सपूत बच्चों को अपने नैनों में बिठा अपने साथ ले जायेगा। इसलिए वो निश्चिन्त और खुश रहें।

बस, अपना 100% attention दे पुरुषार्थ करो। आपको बाप-समान बनाने का कार्य तो बाप का ही है ना...।

इसलिए, जैसे-जैसे बाबा आपको कहते हैं, उसी प्रमाण अपनी मन-बुद्धि को चलाने का पुरुषार्थ 100% करो।

किसी भी आत्मा, परिस्थिति, संस्कारों के प्रभाव में मत आओ और अपनी मन-बुद्धि की डोर बाप के संग जोड़े रखो, उसी डोर से बाबा आपको खींचकर ऊपर बिठा लेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा हम सभी बच्चों के पुरुषार्थ की result check कर रहा था...।
तो बाबा ने देखा कि ... बाबा के कुछ एक बच्चे तो बाप की श्रीमत को 100% follow कर रहे हैं और पुरुषार्थ भी पूरा है कि हम स्वयं के हर संकल्प को बाप को समर्पण कर बाप समान बन जायें...।

बाबा भी उन बच्चों को देख खुश होता है और कहता है - वाह बच्चे वाह ... इसी तरह उड़ते रहो...। और बाप भी इन बच्चों की 100% guarantee लेता है।

फिर बाबा ने कुछ एक बच्चे ऐसे देखें ... जिन्हें लगन है बाप की श्रीमत को follow करने की, और करते भी हैं, परन्तु बीच-बीच में क्या, क्यों, कैसे आ जाता है...!

बाबा उन बच्चों को कहता है ... बच्चे, हिम्मत रख करते चलो तभी आप बाप की मदद के पात्र बन सकते हो...।

ज्यादा सोचो मत, बाप की हर श्रीमत को महीनता से पालन कर, अपना 100% समय सफल करो...।

देखो, लौकिक में भी किसी चीज़ की प्राप्ति की दृढ़ इच्छा हो तो आत्मा दिन-रात एक कर, उस इच्छा को पूरी कर लेती है ... और ये तो कल्प कल्प के भाग्य बनाने की इच्छा है...।
इसलिए दुनिया से न्यारे बन अपनी इस इच्छा को पूरी करो...।

बाबा ने जो अपने तीसरी तरह के बच्चे देखें ... वो पुरुषार्थ करते हैं और पाना भी ऊँच पद चाहते हैं परन्तु आज बाबा उन बच्चों को officially समझानी दे रहा है कि बाप की श्रीमत को महीनता से समझो ... complaint स्वरूप मत बनो - बाबा हमारी सुनता नहीं, बाबा हमारी मदद नहीं करता...!

सोचो, लौकिक में भी माँ-बाप, अपने बच्चों के साथ ऐसा कर सकते हैं क्या...?
लौकिक में भी माँ-बाप का ध्यान सदा अपने कमज़ोर बच्चों पर होता है और यहाँ तो मैं बेहद का बाप हूँ, साथ ही भगवान भी, अर्थात् प्यार के सागर के साथ-साथ त्रिकालदर्शी भी हूँ और knowledgeful भी ... और मुझे अपने कर्तव्य का पता है ... किस तरह, किस problem को solve करना है...!

इसलिए complaint स्वरूप मत बनो...।
अभी तो बाप से और अपने भाग्य से और अन्य आत्माओं से complaint है ... परन्तु अन्त में केवल स्वयं से ही complaint होगी, जोकि पश्चाताप का बहुत भारी रूप होगा...।

क्योंकि दूसरों की गलती तो फिर भी क्षमा की जा सकती है, परन्तु अपनी इतनी बड़ी गलती, जिससे कि हम अपने कल्प-कल्प के भाग्य को कम कर देते हैं...!
तो स्वयं को कैसे माफ कर पायेंगे...?

इसलिए समझदार बनो, बहादुर बनो ... complaint स्वरूप ना बन, complete स्वरूप बनो...।

Complete वही बन सकता है जिसे बाप पर 100% निश्चय है और जिसने शुरु से ही बाप की श्रीमत की पालना की है।

बाप (परमात्मा शिव) की श्रीमत है - इस पुरानी दुनिया से मर जाओ, मेरा-मेरा की बजाए तेरा-तेरा हो जाये, न्यारे हो जाओ...।

तो check करो - हम बाबा की इस श्रीमत का practical स्वरुप बने हैं क्या...?

योग-योग करते हो, योग की result क्या है - "स्व-परिवर्तन अर्थात् स्वभाव-संस्कार का परिवर्तन...।"

योग एक अग्नि का कार्य करती है ... जोकि कठोर से कठोर चीज़ को परिवर्तन कर देती है। तो फिर स्वयं पर attention दो ... बाप की मदद के पात्र बनो...।

हिम्मत रखोगे तभी बाप की मदद मिलेगी। दिलशिकस्त मत बनो, वायुमण्डल के प्रभाव में मत आओ...। शक्तिशाली बन, बाप की मदद के पात्र बन, रास्ते की अपनी हर रुकावट को पार कर अपनी मंज़िल तक पहुँचो...।

ये सारे हिसाब-किताब आप बच्चों के स्वयं के ही बनाये हुए हैं।
इसलिए चुक्तु भी स्वयं ही करने पड़ेंगे...!

बाप आप बच्चों की मदद के लिए ही आया है, परन्तु हिम्मत का एक कदम तो आपको ही बढ़ाना पड़ेगा...!

इसलिए ज्यादा सोचो मत, निश्चय रख पुरुषार्थ करो...।

बाबा तो शुरु से ही कह रहा है कि हल्के रहो ... हल्के रहोगे तो परिस्थिति भी हल्की हो जायेगी।

तो check करो - हम कितने percent बाप की श्रीमत की पालना कर रहे हैं...?

देखो, बाबा तो समय की warning दे रहा है ... "अभी-अभी कर लो...।"

यह ना हो कि विश्व की सबसे बड़ी lottery लगती-लगती रह जाये और आप खाली ही रह जाओ...!

इसलिए, check करो ... यदि अभी अन्तिम घड़ी आ जाये तो हमारी क्या गति होगी...?

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपके अन्दर केवल एक ही संकल्प होना चाहिए ... कि मुझे बाप-समान बन विश्व-परिवर्तन का कार्य करना है और बाप (निराकार शिव) को पूरे विश्व के आगे प्रत्यक्ष करना है।

देखो, यह जो समय जा रहा है यह केवल कमाई का है, इसलिए अपने हर संकल्प पर attention दो और संकल्पों की speed को कम करते जाओ ... क्योंकि समय बिल्कुल थोड़े का भी थोड़ा रह गया है...!

यह मत सोचो कि अभी कुछ ऐसा तो दिख नहीं रहा है...!
परिवर्तन एक झटके से होगा। परिवर्तन में सालों साल नहीं लगेंगे...।

देखो, बाबा प्यार और रहम का सागर है और सभी आत्माओं का बाप भी..., इसलिए लम्बा समय बच्चों को दुःख में नहीं देख सकता।

इसलिए यह कार्य अचानक और आश्चर्यजनक ढंग से होगा। परन्तु आत्माओं को यह समय बहुत लम्बा अनुभव होगा ... क्योंकि दु:ख का थोड़ा समय भी बहुत लम्बा अनुभव होता है...।

समय रुका ही हुआ है केवल 108 रत्नों की माला के लिए...। जैसे ही विजयी रत्न अपनी seat पर set होंगे, वैसे ही कार्य शुरु हो जायेगा...।

और जो बच्चे समय को देख पुरुषार्थ कर रहे है, उनका number उतना ही पीछे होता जा रहा है...!

यह बाप की warning समझो या समझानी समझो, पर अभी-अभी कर लो ... अर्थात् अपनी मन-बुद्धि को इस दुनिया से बाहर निकालो, अन्यथा तो आप बच्चे समझदार हो..., अन्तिम घड़ी कैसी होगी...!

जैसे कहते है ना, छोड़ो तो छूटें ... अर्थात् अपनी मन-बुद्धि को पुरानी दुनिया से निकालो तो आगे का कार्य अर्थात् आपको और आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को सम्पन्न बना, घर (परमधाम) ले जाने का कार्य बाप स्वयं कर देंगे।
परन्तु इतना तो आपको ही करना पड़ेगा...। यह बाप नहीं करेगा...!

इसके लिए बाबा ने आपको कई युक्तियां बताई है।
बस, अमल में लाओ...।

कहने से या सोचने से नहीं होगा, करने से होगा...।

इसलिए बाप की हर direction पर attention दो और उसे practical में अनुभव करो और check करो कि मैं कितना percent विजयी बना हूँ...?

Check के साथ change ज़रुरी है...।

सोचो तो सही ... बाप, आप बच्चों के साथ practical में हैं, तो आप नहीं करोगे तो कौन करेगा...?

बाप की पालना का return दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.12.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बिल्कुल हल्के रहना है, कोई भी program बनाओ, कुछ भी करो..., double light रहकर करना है...।

Light रहना अर्थात् मैं point of light ... और संकल्पों से भी बहुत light, और light चीज़ ही ऊपर की तरफ उड़ सकती है।

इसी तरह जब आप आत्मायें हल्की रहती हो, तो ऊपर ही ऊपर उड़ती रहती हो और जैसे ही संकल्पों से minor सा भी भारी होते हो, तो नीचे की ओर आना शुरू हो जाते हो, और फिर (ऊपर जाने के लिए) पुरुषार्थ करते हो...!

इसमें देखो कमाई करने का बहुमूल्य समय कितना खराब होता है, जो बाप को अच्छा नहीं लगता...!
इसलिए सदा बाप के संग रह हल्के रहो।

देखो, अब तो स्वयं भगवान direct आ गया है, आप बच्चों को पढ़ाने के लिए...।
जबकि इससे पहले भी किसी भी

परिस्थिति ने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा, तो अब तो हर तूफान तोहफा बनेगा, इतना निश्चय रखो...।

यह बच्चों के लिए हीरे-तुल्य समय चल रहा है जोकि केवल प्राप्तियों का है।

बस थोड़ा बहुत पुराना हिसाब-किताब है जोकि बाबा साथ बैठ सहज से सहज रीति चुक्तु करवा रहा है, क्योंकि बाबा नहीं चाहता कि बच्चे अपना एक second भी बरबाद करें।

बस, सबकुछ बाप (परमात्मा शिव) हवाले कर, हल्के रह उड़ते रहो...।

पूरे कल्प सब कुछ मिलेगा, परन्तु शिव साजन नहीं..., जिसे पाने के लिए सभी मनुष्य आत्मायें कितना भटक रही है...!

परमात्मा बाप से मिलने के, संगम के समय के, स्वयं के भाग्य के ... गुणगान करते रहो और उमंग उत्साह के साथ उड़ते रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.12.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, drama की हर scene को देखते, उसके हर second में स्वयं का कल्याण अनुभव करते हो..., या थोड़ा बहुत हलचल होती है...?

हलचल होना अर्थात निश्चय की percentage में कमी...।

देखो, विजय का आधार प्रेम और विश्वास है और जब बच्चे सच्चे दिल से एक बाप से ही प्यार करते हो और 100% निश्चय भी रखते हों ... तो एक second से भी बहुत कम समय में, आप बच्चों की 100% विजय हो जाती है।

जैसे कोई छोटा बच्चा बाप के साथ कहीं जाता है और रास्ता उसके चलने लायक नहीं होता, तो वो और ज़ोर से बाप का हाथ पकड़ लेता है, तो बाप भी जल्दी ही उसको अपनी गोदी में उठा लेता है ... और कई बार बाप बच्चों को ऐसे रास्ते पर चलने भी देता है, ताकि बच्चे में power आये ... परन्तु बाप का ध्यान बच्चे पर 100% रहता है कि बच्चे को कहीं minor सी भी चोट ना लग जाये..., बच्चा गिर ना जाये..., क्यों...?

क्योंकि बाप को पता है कि बच्चे को सम्भालने की ज़िम्मेवारी केवल मेरी ही है और यदि बच्चा यह सोचने लगे कि मैं रास्ता कैसे cross करूँगा...?
तो automatically बाप का हाथ और साथ छूट जाता है और वो अपना responsible स्वयं बन जाता है।

इस दुनिया में भी बाप का प्यार बच्चों से, बच्चों के comparison में ज्यादा होता है। बच्चे तो केवल जब तक बाप की ज़रूरत होती है, तब तक बाप से 100% प्यार करते हैं, फिर उनका प्यार भी बट जाता है। परन्तु माँ-बाप तो अन्त तक बच्चों पर अपनी जान तक न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं ... और यहाँ तो भगवान, केवल बाप ही नहीं ... बल्कि सारे सम्बन्धों के साथ आपका बना है और आपकी 100% ज़िम्मेवारी भी लेता है।

बस बाबा इतना ही कहते हैं;
बच्चे, मुझ पर समर्पण हो जाओ अर्थात् अपनी देह सहित, देह की सारी दुनिया बाप के हवाले कर मौज से नाचो-गाओ ... क्योंकि हर बात में आप बच्चों का ही कल्याण समाया हुआ है, ज्यादा सोचो मत, बस धैर्यता रखो...।

बाप जैसे कहें, बस "हाँ-जी, हाँ-जी" कह चलते चलो, फिर देखो बाबा की कमाल पर कमाल...।

बेहद का बाप है तो बेहद की कमाल होगी ना...। जिसका साथी है भगवान, उसका क्या बिगाड़ेगा आँधी और तुफान...!

ज्यादा कुछ भी नहीं करना, बस खुश रहो, सन्तुष्ट रहो, निश्चिन्त रहो, हल्के रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

सभी बच्चे विजय माला में आना चाहते हैं और ऊँचे से ऊँचा पुरुषार्थ भी करना चाहते हैं।
परन्तु फिर भी नम्बरवार बन जाते हैं, क्यों...?

क्योंकि बच्चे अपने संस्कार परिवर्तन करने में नम्बरवार है...!

संस्कार परिवर्तन करना अर्थात् ... अपना सब कुछ तेरा-तेरा-तेरा कर देना...।

वैसे तो बच्चे मन से करते भी हैं अर्थात् सोचते भी हैं, सब कुछ आपका है ... परन्तु जैसे ही कोई भी प्रकार की हलचल को देखते हैं, तो स्वयं ही हलचल में आ जाते हैं।
कैसे होगा..., कुछ हो तो रहा नहीं...?

जब बाप को सौंप दिया, ज़िम्मेवारी बाप की हो गई ... तो क्या बाप पर निश्चय नहीं है...?

निश्चय अर्थात् निश्चिन्त...।
अगर निश्चिन्त अवस्था नहीं है, तो यही कहा जायेगा ना कि या तो मेरा-मेरा है या फिर बाप पर 100% निश्चय नहीं है...!

100% निश्चय हो, तो रमता योगी बन जायें...। उमंग-उत्साह, खुशी में उड़ता रहें...।

देखो, बाप है जानी-जाननहार, साथ में हैं सर्वशक्तिवान् ... अर्थात् वो कुछ भी कर सकता है, परन्तु बच्चों के कल्याण को देख उसी according अपना part play करता है।

इसलिए बच्चे, अपने निश्चय को बढ़ाओ, समर्पण भाव को बढ़ाओ...।

यह मत सोचो;
मेरा बच्चा, मेरा तन, मेरा कारोबार, मेरा घर..., नहीं...।
• यह मेरा-मेरा आप बच्चों को आगे बढ़ने नहीं देगा।
• यह मेरा-मेरा आपको मंज़िल से दूर कर देता है।

बस यही सोचो कि मेरी ज़िम्मेवारी बस स्वयं को सम्पन्न बना विश्व को परिवर्तन करने की है।

हलचल को देख हलचल में मत आओ, बाप के समान त्रिकालदर्शी बनो...।

जब बाप guarantee ले रहा है, तो हर बात में अपना कल्याण समझ आगे बढ़ो...।

यदि कुछ ऊपर-नीचे हो भी रहा है, तो भी 100% इसमें आपका कल्याण समाया हुआ है।

देह, और देह की दुनिया से साक्षी होना अर्थात् विजय माला में आना है...।

बस बच्चे, पूरी रीति बाप के प्यार में समा जाओ..., खो जाओ..., फिर देखना बाप की कमाल...।

कमाल अर्थात् जादूगरी...।

बाप भी आप बच्चों के प्यार में सब कुछ करने को तैयार रहता है, बस थोड़ा-सा धैर्य रखो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आप सबको अन्तिम से अन्तिम समय को सामने रख और ऊँचे से ऊँचे लक्ष्य को भी सामने रख, पुरुषार्थ करना है।

बाप आप सब बच्चों के साथ है और बाप की एक यही इच्छा है कि बच्चे जल्दी से जल्दी सम्पन्न बन, विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करें...।
इसलिए, आप सब बच्चों की भी केवल यही एक इच्छा होनी चाहिए...।

हल्के रहकर पुरुषार्थ करना है। जब बाप बच्चों का मददगार है, तो हुआ ही पड़ा है ना...।

‘‘हिम्मते बच्चे, मददे बाप’’ ... पर हिम्मत भी कौन-सी...?
मन्सा-वाचा-कर्मणा, हर छोटी-बड़ी श्रीमत को 100% follow करने की...।

जितने percent श्रीमत की पालना, उतनी percent मदद...।

देखो, बाप का आकर यूँ विशेष रीति पढ़ाना और मदद करना, इसके महत्व को अच्छी तरह से समझकर चलो, इसे general मत लो।

बाप (परमात्मा शिव), जिसे सारी दुनिया ढूँढ रही है, वो स्वयं आया है ... इसकी importance को समझ अपनी दिनचर्या व्यतीत करो, अन्यथा खून के आँसू बहाने पड़ेंगे और वो समय भी दूर नहीं है...!

इस समय की थोड़ी-सी लापरवाही वा अलबेलापन आपको पुरानी दुनिया की तरफ ले जायेगा, जहाँ केवल दुःख-ही-दुःख है।

इसलिए हर समय अपने संकल्पों की वा स्व-स्थिति की checking रखो, और बाप की श्रीमत प्रमाण आगे से आगे बढ़ते चलो...।

यह मत सोचो कि हम तो इतना ही कर सकते हैं अर्थात् हम बाप की श्रीमत प्रमाण इतना percent ही चल सकते हैं...!

यह अलबेलापन आगे चल आपके रास्ते की रुकावट बन जायेगा जोकि आपको मंज़िल तक पहुँचने नहीं देगा और वो समय केवल पश्चाताप का होगा।

इसलिए, अच्छी रीति हर श्रीमत को follow करो।
बाप के संग रहने का पुरुषार्थ करोगे, तो सब सहज हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

जो आत्मा जितनी positive संकल्पों से भरपूर होती है ... उतनी शान्त, शीतल, हर्षित और सन्तुष्ट होती है अर्थात् बाप-समान होती है...।

इसलिए, कोई बड़ी से बड़ी बात हो उसे संकल्पों द्वारा छोटा करो अर्थात् हल्का करो ... क्योंकि, परिस्थिति का ज्यादा मंथन करने से कोई भी समाधान नहीं निकलता बल्कि आत्मा भारी हो जाती है।

बच्चे, हर बात बाप को समर्पण कर स्वयं को positive संकल्पों से भरपूर कर दो, फिर आप बच्चों के हर संकल्प सिद्ध होने लग जायेगे...।

इसके लिए बुद्धि द्वारा मैं और मेरे का त्याग कर, तेरा-तेरा करना पड़ेगा...।

देखो, अगर आपका संस्कार समय से पहले काम करने का है और कुछ आत्माओं का slow-slow करने का संस्कार है, तो आप moulding power use करो...।

बच्चे, समय से पहले कार्य करना यह आपका सात्विक संस्कार है, परन्तु साथ में धैर्यता और शान्ति को add करो ... और साथ ही शुभ भावना और शुभ कामना अर्थात् positive संकल्प रखो...।
कोई भी व्यर्थ संकल्प नहीं होने चाहिए।

देखो, आपके संपर्क में आने वाली आत्माओं का परिवर्तन आपके परिवर्तन पर depend करता है...।

हमेशा आपको इन सभी आत्माओं का धन्यवाद करना चाहिए अर्थात् दुआयें देनी चाहिए, क्योंकि यही आत्माएं आपको सम्पन्न बनाने के निमित्त बनी हुई है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आपका अपनी मन-बुद्धि की तरफ कितना percent attention है...?

यह जो अंत के भी अंत का समय जा रहा है, यह समय स्वयं को ऊँच से ऊँच स्वमान में स्थित कर, बाप के संग रह, बेहद की सेवा का है ... क्योंकि, यह जो पुरानी जड़जड़ीभूत दुनिया में मनुष्य आत्माओं को देह, देह के सम्बन्धों, वैभवों और प्रकृति के पाँच तत्वों से जो अल्पकाल का सुख मिल रहा है, वो अब दुःख में परिवर्तन होने वाला है...।

इसलिए आप बच्चों को वो समय आने से पहले 100% अपनी मन-बुद्धि इस पुरानी दुनिया से detach करनी है। बाद में अर्थात् समय के नज़दीक आने पर इससे detach होना, असम्भव है...।

अभी आप बच्चों को समय का भी और बाप का भी full सहयोग है ... इसलिए ज्यादा सोचो मत कि कोई भी या किसी भी तरह का दुनियावी कार्य मेरा है वा मुझे ही करना पड़ेगा, वा मेरी ही duty है...!

इस समय आपकी duty केवल स्वयं को अनादि स्वरूप में स्थित कर, बाप (निराकार शिव) के संग रह, बेहद की सेवा करने की है - और यही पुरुषार्थ करना अर्थात् अपनी मंज़िल की तरफ कदम बढ़ाना है...।

और दूसरी तरफ;
आप जब अपनी स्थूल हर तरह की ज़िम्मेवारी, कमी, कमज़ोरी 100% बाप को समर्पण करते हो अर्थात् बाप पर 100% निश्चय रख, बाप के कार्य में मददगार बनते हो ... तो अंत तक बाप आपका ज़िम्मेवार बन, आपके हर कार्य में आपका 100% साथ निभायेगा...।

अब आपको स्वयं ही स्वयं का निर्णय करना है कि मुझे क्या करना है...?

जो बच्चे अभी भी बाप की श्रीमत को 100% follow करने का पुरुषार्थ कर रहे है, उन्हें बाप की full मदद है ... और यह मदद ही उन्हें मंज़िल तक पहुँचा देगी...।

देखो, माया के भिन्न-भिन्न रुपों को अच्छी तरह से पहचानों ... और स्वयं को इससे safe रखो..., नहीं तो बाद में बहुत पछताना पड़ेगा...!

अब आप बच्चों का पुरुषार्थ बहुत ऊँचा होना चाहिए, अर्थात् इस दुनिया से 100% न्यारा रह बाप का प्यारा बनने का पुरुषार्थ होना चाहिए...।

अभी तो फिर भी हर बच्चे को यथा-शक्ति बाप का सहयोग मिल रहा है, परन्तु कुछ ही समय के बाद बाप-समान बनने का पुरुषार्थ करने वाले बच्चों को ही बाप का सहयोग मिलेगा...।

इसलिए, जल्दी-जल्दी check और change करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आप अपने ऊँचे भाग्य को जानते हो...? और इस ऊँचे भाग्य के नशे में रहकर चलते हो क्या...?

देखो, आप बच्चों पर direct भगवान की नज़र है ... सो आपके अंदर कितना ना खुशी और उमंग-उत्साह होना चाहिए...!

देखो, बाबा हर पल आप बच्चों के साथ है, पर फिर भी प्रत्यक्ष रूप में तो बच्चे ही हैं ... और उन्हें ही हर परिस्थिति का सामना करना पड़ता है ... और बच्चे जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, तो परिस्थिति नये-नये रूप में आती है...।

परन्तु आप बच्चे उसे paper ना समझ, आगे बढ़ने की lift समझ पार कर लो ... अर्थात् बाप की श्रीमत और बाप को अपने संग रखो।
फिर सब सहज हो जाएगा...।

देखो, इस रास्ते में आगे बढ़ने का साधन...,
• उमंग,
• उत्साह,
• खुशी,
• धैर्यता,
• निश्चय,
• नशा,
• दृढ़ता
और
• हिम्मत है ... तो फिर बाप का भी साथ है ही है...।

बस, अपने ऊँचे से ऊँचे भाग्य के स्मृति स्वरूप बन अपने ऊँचे लक्ष्य को सामने रख पुरुषार्थ करो...।

इस पुरुषार्थ में...,
• ना तो थकना है,
• ना ही घबराना है
और
• ना ही दिलशिकस्त होना है
• ना ही अलबेला होना है...। बिल्कुल हल्के रहकर पुरुषार्थ करना है...।

कोई भी बात हो, बाप से रूह-रिहान कर बाप को वो बात सौंप दो...। फिर धैर्यतापूर्वक बाप के संग बैठ जाओ अर्थात् wait and watch ... फिर देखो, कैसे सफलता और विजय आप बच्चों के पांव चुमती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

इन कर्मेन्द्रियों से प्राप्त सुख अल्पकालिक है, अर्थात् विनाशी है ... और जब तक आप बच्चों को इनसे प्राप्तियों का रस अनुभव होगा, तब तक आप अविनाशी सुख और शान्ति का अनुभव सदाकाल नहीं कर सकते...!

जैसेकि;
किसी भी सुन्दर चीज़ को देखकर खुश होना..., सुख-सुविधा के साधनों से प्राप्ति का अनुभव होना..., अर्थात् महीनता से checking करो कि मन को कहाँ-कहाँ से सुख की प्राप्ति हो रही है...?

यदि इस देह और देह की दुनिया से ही सुख की प्राप्ति होती रही, जोकि अभी-अभी सुख और अभी-अभी दुःख देने वाली है ... तब आप सदाकाल के लिए अतिन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं कर सकते...।

ऊँच पद की प्राप्ति करनी है तो checking भी महीनता से करनी पड़ेगी...।

यह त्याग, सुखों का त्याग नहीं दुःखों का त्याग है, क्योंकि कुछ ही समय में यह पाँच तत्वों से बना संसार अत्यधिक दुःख में परिवर्तन होने वाला है।

बस, सबकुछ करते भी अपनी मन-बुद्धि सब चीज़ों से निकाल, एक बाप में लगा लो ... अर्थात् स्वयं को विशेष आत्मा समझ परमात्मा के प्यार में खो जाओ, क्योंकि परमात्म प्यार से प्राप्त सुख ही अविनाशी सुख है।

यह मत सोचो कि इसका भी त्याग करना है..., इसका भी त्याग करना है..., नहीं...।
केवल आपको इन सब चीज़ों का ज्ञान होना चाहिए ... परन्तु संकल्पों द्वारा, परमात्मा द्वारा प्राप्त खुशी, सुख अर्थात् बेहद और अविनाशी प्राप्तियों में रमण करो...।

इसके लिए केवल संकल्पों के direction को change करो, क्योंकि परमात्म सुख ही हमारी संगमयुग की प्रालब्ध और भविष्य की प्रालब्ध बनाता है।

जब त्याग-त्याग करते हो, तो भारी हो जाते हो ... और जब प्राप्त हुई प्राप्तियों और प्राप्त होने वाले सुख के बारे में सोचते हो तो automatically उमंग-उत्साह में आ आगे से आगे बढ़ने लग जाते हो...।

कोई भी त्याग हठ-पूर्वक नहीं बल्कि ज्ञानी तू आत्मा बन परमात्म प्यार से करना है ... फिर वो त्याग, त्याग नहीं रहेगा बल्कि ऊँचा भाग्य बनाने का साधन बन जायेगा।

यही सच्चा परमात्म प्यार आप बच्चों को ज्ञान स्वरूप, गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बना देगा...।

आप सब बच्चों को बस बाबा (निराकार शिव) के साथ बैठ अपने original स्वरूप और original कर्तव्य की स्मृति में रहना है।

अतिन्द्रिय सुख आत्मा और परमात्मा के मिलन में है, ना कि इन पाँच तत्वों से बनी देह और देह की दुनिया में है...!
इसलिए इससे सम्पूर्ण रीति वैराग्य लाओ...। यह बहुत सहज है, क्योंकि इस समय बाबा का full सहयोग है।

बस संकल्पों द्वारा इसे बिल्कुल सहज समझकर करो...।

देखो, यह अतिन्द्रिय सुख आप पूरे कल्प में केवल इसी समय अनुभव करते हो और तो आप हमेशा कर्मन्द्रियों के सुख में ही रमण करते हो...!
इसलिए, इस समय इन कर्मन्द्रियों के सुख से न्यारा होना सहज नहीं लगता...!

आप बच्चों को इन सब चीज़ों के बीच में रहते अपनी मन-बुद्धि को इन सबसे न्यारा करना है अर्थात् आपको कोई खींच ना हो, केवल एक ही लगन हो कि मुझे स्वयं को अनुभव कर, बाप को अनुभव करना है और बाप के कर्तव्य को पूरा करना ही अपनी ज़िम्मेवारी समझना है।

इसलिए, उमंग-उत्साह से सम्पन्न संकल्पों को अपने साथ रखो ... वैसे भी जब बाबा साथ है, तो हुआ ही पड़ा है ना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा हमेशा कहता है कि;
किसी भी प्रकार की हलचल को देख हलचल में मत आओ। फिर भी आप बच्चे हलचल में आ जाते हो..., क्यों...?

क्योंकि अभी तक मेरा-मेरा बहुत ज्यादा है और यह मेरा-मेरा ही दुःख और अशान्ति का कारण है।

देखो, जबकि आप बच्चे अब संगम के भी अन्तिम चरण में हो जोकि आगे चलकर अर्थात् बहुत थोड़े से थोड़े समय में हाहाकार वाला होगा।

उस scene को देखने और सामना करने की शक्ति बहुत थोड़े से बच्चों में होगी, जिन्होंने 100% बाप की श्रीमत को पालन करने का पुरुषार्थ किया होगा, केवल उनमें...।

जबसे बाबा आया है, तबसे यही कह रहा है कि हर जगह से बुद्धि निकाल लो ... अन्यथा यह तन, मन, धन, जन, सुख, सुविधा ... सब, आपको ना चाहते हुए भी बुरी तरह से अपनी तरफ खींचेंगे...।

क्योंकि अन्तिम समय प्रकृति के पाँच तत्व और पाँच तत्वों से बना यह सारा संसार बुरी तरह से हलचल में होगा और ऐसे समय में अचल स्थिति में वो ही स्थित रह सकेगा जिसमें एक तो सम्पूर्ण रीति समर्पण भाव होगा, दूसरा अशरीरी बनने का full अभ्यास होगा।

इसलिए अब अपनी तरफ attention बढ़ाओ। अपने हर संकल्प को खुद check करो कि आपके संकल्प किस दिशा में जा रहे हैं...?
और अन्त के समय में कोई भी बहानेबाज़ी नहीं चलेगी...!

इसलिए इन सब अर्थात् देह और देह से सम्बन्धित हर चीज़ से 100% न्यारे हो सारी अर्थात् सम्पूर्ण ज़िम्मेवारी बाप को सौंप दो। इसमें अलबेले मत बनना अन्यथा बहुत पछताना पड़ेगा...।

100% समर्पण बुद्धि वाले बच्चों के साथ बाप (परमात्मा शिव) का भी 100% promise है कि अन्त के समय में भी जब दुनिया हाहाकार में होगी, पर बाप के बच्चे मौज में होंगे...।

बाप पर निश्चय रखो और स्वयं को 100% बाप हवाले कर अर्थात् बाप जहाँ बिठायें, जो खिलायें, बाबा आपकी मर्ज़ी ... और अपनी मन-बुद्धि को बाप की याद में, बाप के प्यार में लगा दो।

अपने पूरे कल्प के इस महत्वपूर्ण समय के महत्व को समझ अपना एक-एक second सफल करो, क्योंकि त्याग के आगे प्राप्ति पदमगुणा ज्यादा है।

करना भी कुछ नहीं है - बस समर्पण हो जाओ...।

हर कमज़ोर संस्कार, संकल्प सबकुछ बाबा को बार-बार देने का पुरुषार्थ बढ़ाते जाओ। आपके इस पुरुषार्थ से ही बाप समय आने पर आपको बिल्कुल हल्का कर देगा और आपकी ऊँच प्रालब्ध भी बना देगा।

बस attention देना है...,
• हल्के रहना है
• ना ही अलबेले होना है
और
• ना ही दिलशिकस्त
और
• ना ही हार खानी है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बस, तेरा-तेरा ही करते जाना है। हमेशा स्वयं को बाप-समान समझ कर्म व्यवहार में आना है।

किसी भी आत्मा का कैसा भी part देख ... क्या, क्यों, ना कर उस आत्मा के प्रति 100% शुभ-भावना रख, स्वयं के प्रति full attention रखना है ... क्योंकि drama बिल्कुल accurate बना हुआ है।

स्वयं को बिल्कुल अचल-अडोल स्थिति में स्थित रखना है, चाहे कोई पहाड़ जैसी परिस्थिति भी आये, तब भी...।
क्योंकि, परमात्मा आप बच्चों के संग है ... कोई भी आप बच्चों का बाल बांका भी नहीं कर सकता..., तो परिस्थितियां आप बच्चों के आगे क्या चीज़ है...!

परन्तु कई बार किसी बात में कुछ समय भी लगता है तो भी आप निश्चिन्त रहो क्योंकि बाबा आपका well-wisher के साथ-साथ त्रिकालदर्शी भी है और बाप को ही पता है कि किस बात में आपका कल्याण है।

इसलिए निश्चय रख, निश्चिन्त रहो ... उचित समय आने पर जिस समय केवल आप बच्चों का कल्याण होगा, वो कार्य आपका सम्पन्न हो जाएगा...।

बस तेरा-तेरा करना है, यह नहीं - मेरा संस्कार है ... मैं कमज़ोर हूँ, नहीं...!
मेरा बाप-समान संस्कार है ... मैं तो हूँ ही बाप-समान।
बस, और कुछ नहीं सोचना...।

जब विजयी रत्न, सफलतामूर्त बनना है, तो अभी से ही तो हर कार्य में विजय और सफलता मिलेगी ... तभी तो आपका गायन होगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.12.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

यदि विश्व महाराजा वा विश्व महारानी बनना है ... तो पुरानी देह, देह के सम्बन्ध, वस्तु, वैभव, पुराने स्वभाव-संस्कार, सबसे मरना पड़ेगा...!

अर्थात् हमेशा स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित कर बाप (परमात्मा शिव) के संग रह, निरसंकल्प स्थिति में रहना पड़ेगा...।

इसके लिए एक तो कोई भी कार्य करते हुए अर्थात् कोई भी कर्मइन्द्रिय द्वारा कर्म किया फिर उससे न्यारे हो, निरसंकल्प स्थिति अर्थात् उस कार्य, परिस्थिति, बोल के प्रभाव से न्यारे हो जाओ...।

और दूसरा;
कार्य को शुरू करने से पहले, वो कार्य बाप को समर्पण कर दो ... और कार्य finish कर, कार्य का result भी बाप को सौंप दो..., फिर आपके हर कार्य का ज़िम्मेवार बाप हो जाएगा...।
और जिस कार्य का ज़िम्मेवार बाप होगा, उस कार्य में आप बच्चे विजयी ना बनो ... यह तो असम्भव है...!

देखो, आपके देवी-देवता स्वरूप में भी हर्षित और शान्त चेहरा दिखाते हैं ... वो केवल ज़रूरत के शब्द बोल, उससे न्यारे हो जाते हैं ... क्योंकि उन्हें पता है कि अन्तिम विजय हमारी ही है...। इतना निश्चय आप बच्चों को भी होना चाहिए, तभी आपकी स्थिति अचल-अडोल होगी...।
और जब इस स्वरूप में रहोगे, तभी आप साक्षात्कार मूर्त बनोगे...।

बस, इसके लिए attention वा अभ्यास की ज़रूरत है...।

वैसे भी अब आप बच्चे मंज़िल के समीप हो ... इसलिए यह पुरूषार्थ भी सहज ही हो जायेगा। बस बाप के संग रह, अपने ऊँच स्वमान में स्थित रहना है ... और यही पुरूषार्थ कम से कम समय में आपको बाप-समान बना देगा...।

बच्चों के अन्दर लगन बहुत अच्छी है, बाबा खुश है ... और जिन बच्चों पर बाप खुश हो, उनकी सफलता निश्चित ही है...।

इसी तरह उमंग-उत्साह में रह उड़ते रहो। जब आप बच्चे हर कार्य के प्रभाव से न्यारे हो जाओगे तब आपका प्रभाव निकलेगा।
बिल्कुल निश्चिन्त स्थिति में स्थित रहना है...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

स्वयं भगवान आकर थोड़े से थोड़े, उसमें भी थोड़े से बच्चों को विशेष पालना भी देता है और विशेष स्नेह, सहयोग और शक्ति भी...।
फिर भी बच्चे नम्बरवार ही बनते हैं...!

जो बच्चे बाप की श्रीमत को 100% मन-बुद्धि में रखकर चलते हैं अर्थात् उनका केवल बाप ही संसार है ... उन बच्चों का अपने ऊपर full attention है ... और उन बच्चों का परिवर्तन भी speed से हो रहा है ... अर्थात् वो बच्चे ही बाप-समान बच्चे बनते हैं ... और वो बच्चे ही बाप के;
• मस्तकमणी,
• दिलतख्तनशीन,
• नूरे-रत्न बच्चे हैं,
• बाप की आशाओं को पूरा करने वाले बच्चे हैं...।

दूसरी तरफ;
वो बच्चे हैं ... जिनका भी अपनी तरफ attention हैं ... इनको भी एक ही लगन है कि बाप-समान बनना ही है...।
परन्तु कभी-कभी दुनिया में बुद्धि भी जाती, संस्कारों से भी हार जाते, अर्थात् बार-बार connection जोड़ने का अभ्यास करते हैं..., परन्तु फिर भी इन बच्चों से बाप को बहुत प्यार है, इसलिए यह बच्चे बाप के गले की माला अर्थात् सिमरणी माला के दाने बन जाते हैं...।

और फिर तीसरी तरफ...
यह बच्चे जो हैं, वो पुरुषार्थ तो करने की इच्छा रखते हैं और चाहते भी यही है कि हम भी बाप-समान बनें...! परन्तु बहुत जल्दी ही हार खा लेते हैं..., क्यों...?
क्योंकि दुनिया से वैराग्य नहीं है...! अभी भी बहुत सारी इच्छाएं हैं, दुनिया से ही प्राप्ति की इच्छा है ... इस कारण भगवान् के द्वारा full सम्पन्न नहीं बन पाते ... और इन बच्चों के एक ही बोल हैं कि सारा दिन थोड़े ना ही योग लग सकता है...!

परन्तु, योग क्या है...?
योग है एक प्यार ... जोकि हमें इस समय केवल एक बाप (निराकार शिव) से करना है, अर्थात् सब सम्बन्धों का सुख, वैभव, वस्तुओं का सुख केवल बाप से ही अनुभव करना है ... और इस सुख, आनन्द, खुशी और संतुष्टता के आगे दुनिया से प्राप्त होने वाला सुख, मिट्टी के बराबर है...।

बस, थोड़ा-सा समय दृढ़तापूर्वक करना पड़ता है। जितना बाप को combined रखोगे, उतनी ही जल्दी प्राप्तियां शुरु हो जायेंगी, फिर तो सहज हो जायेगा...।